ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को
गणतन्त्र दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 40, अंक 13 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 23 जनवरी, 2017 से रविवार 29 जनवरी, 2017
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 4
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

17वां आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

परिचय सम्मेलन सम्मेलनों से शादी की राह आसान : जीवन साथी चयन का सर्वोत्तम मंच है परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 17वां आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन 22 जनवरी 2017 को अशोक विहार-1 में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ वेद मंत्रों के साथ अतिथियों द्वारा सामूहिक दीप प्रज्ज्वन करके किया गया। तदुपरान्त आर्य समाज अशोक विहार-1 के पदाधिकारियों एवं राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुन देव चढ़डा व दिल्ली संयोजक श्री एस.पी. सिंह द्वारा अथितियों सर्वश्री सत्यपाल आर्य जी, अजय सहगल, धर्मपाल आर्य, श्रीमती वीना आर्य, हर्षप्रिय आर्य, श्रीमती विभा आर्य, श्रीमती आरती आर्य, विनय आर्य का पटका, राजस्थानी पगड़ी व शॉल पहनाकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री प्रेम सचदेवा प्रधान आर्य समाज अशोक विहार-1 ने की।

दीप प्रज्ज्वलित करके 17वें परिचय सम्मेलन का शुभारम्भ करते समाजसेवी श्री सत्यपाल आर्य जी साथ में हैं श्री अजय सहगल जी, श्री धर्मपाल आर्य जी व श्री जीवनलाल आर्य जी

नीचे - अपना परिचय देते प्रतिभागी अपने माता-पिता अभिभावकों के साथ

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री अजय सहगल जी ने कहा 'इस तरह के सम्मेलनों की आवश्यकता क्यों पड़ी। जो बच्चे बचपन से ही आर्य समाज में आते रहे, उनके युवा

- शेष पृष्ठ 3 पर

सम्मेलन मे उपस्थित प्रतिभागियों एवं आर्य परिवारों से भरा आर्यसमाज अशोक विहार-1 का हॉल एवं सेवाएं देते आर्य कार्यकर्तागण

समस्त आर्यसमाजें एवं आर्य संस्थान उत्साह के साथ आयोजित करें

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव

दयानन्द दशमी (फाल्गुन कृष्ण 10) - 21 फरवरी, 2017 (मंगलवार)

समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों की सूचनार्थ है कि हम सबके प्रेरणास्रोत आर्यसमाज के संस्थापक **महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस** इस वर्ष **21 फरवरी** को है। भारत सरकार की ओर इस दिन एच्छिक अवकाश घोषित है तथा कुछ राज्यों में राजपत्रित अवकाश भी है। अत: आप सबसे प्रार्थना है कि आप इसके आयोजन की तैयारियां अभी से आरम्भ कर दें। इस दिन **सार्वजनिक स्थानों पर यज्ञ, साहित्य वितरण, भण्डारा/ऋषि लंगर, शोभायात्रा, भजन संध्या/काव्य संध्या** आयोजित करके जनसाधारण एवं क्षेत्र के प्रतिष्ठित लोगों को आमन्त्रित करें। साहित्य वितरण के लिए लघु सत्यार्थ प्रकाश, आर्यसमाज के स्वर्णिम सूत्र, एक निमन्त्रण, महर्षि दयानन्द जीवनी आदि सभा कार्यालय में उपलब्ध है, प्राप्त करने के लिए मो. 9540040339 पर सम्पर्क करें। - महामन्त्री

दिल्ली सभा के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एवं भव्य भजन संध्या

21 फरवरी, 2017 सायं 3 से 7 बजे - नन्दन वन पार्क, सागरपुर, नई दिल्ली-46

वेद-स्वाध्याय

प्रभो! तेरी कृपा का एक कण

दिवो नु मां बृहतो अन्तरिक्षादपां स्तोको अभ्यपप्तद् रसेन।
समिन्द्रियेण पयसाहमग्ने छन्दोभिर्यज्ञैः सुकृतां कृतेन्।। - अथर्व. 6/124/1
ऋषिः **अथव।।** देवता -**दिव्या आपः।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ-दिवः=तेरे ज्ञानप्रकाशमय द्युलोकरूपी **बृहतः अन्तरिक्षात् नु**=महान् अन्तरिक्ष से ही **अपां स्तोकः**=तेरे ज्ञान-कर्म-शक्तिरूप जलों का एक स्वल्पकण **रसेन**=अपने तृप्तिदायक रस से युक्त **मां अभि**=मुझपर **अपप्तत्**=गिरा; और **अहम्**=मैं **अग्ने**=हे परमेश्वर! तेरे इस स्वल्प जलकण द्वारा **इन्द्रियेण**=(इन्द्रवीर्य) आत्मबल से **पयसा**=पोषक ज्ञान से **छन्दोभिः**=वेदमन्त्रों से **यज्ञैः**=यज्ञों से, शुभ कर्मो से और **सुकृतां कृतेन**=पुण्य कर्मो के फल अर्थात् सुख से **सम्**=संयुक्त हो गया हूँ।

विनय - हे महान् प्रभो! हम अज्ञ मनुष्य अपनी तुच्छ कामनाओं को यूँ ही इतना भारी समझा करते हैं। हम मनुष्यों को जिस समय जो कामना होती है, उसे हम इतना अधिक महत्त्व देते हैं कि हम समझते हैं यदि हमारी वह इच्छा पूरी न हुई तो हम पर जाएँगे और यदि पूरी हो गई तो सदा के लिए उससे निहाल हो जाएँगे-मानो फिर हमें कुछ कामना ही न रहेगी, परन्तु हम अपनी इच्छाओं को इतना महत्त्व इसीलिए देते हैं, क्योंकि हम तुम्हारे अनन्त महत्त्व को अनुभव नहीं करते। हम यह अनुभव नहीं करते कि तुम तो जल के अपार समुद्र हो और हमारी प्रबल-से-प्रबल प्यास को (जिसके मारे हम मरे जाते हैं) एक लुटियाभर पानी से बुझा सकते हो। नहीं, तुम तो तुष्टियों के बरसानेवाले, सब ओर फैले हुए असीम अन्तरिक्ष हो और तुम हमें अपनी इस अनन्त वृष्टि में से केवल एक बूँद ही देकर तृप्त कर सकते हो-छका सकते हो। तुम्हारे दिव्य ज्ञानमय बृहद् आकाश से बरसनेवाले ज्ञान-बिन्दुओं में से एक बूँद में ही वह रस है, वह शक्ति है कि हम उन ज्ञान-बिन्दुओं को ही पाकर परितृप्त हो जाते हैं। हे प्रभो! मुझे न जाने कितनी कामनाएँ थी, मुझे अपने में न्यूनताएँ-ही-न्यूनताएँ दिखलाई देती थीं और मैं समझता था कि मेरी ये न्यूनताएँ पूरा यत्न करते हुए भी कई जन्मों में भी पूर्ण न होंगी, परन्तु हे पितः! मैं क्या बताऊँ, तेरे ज्ञानप्रकाशमय दिव्य अन्तरिक्ष से मुझपर तेरी एक ही बूँद गिरी, पर उसमें वह रस था कि उस तेरे शक्तिकण द्वारा मुझमें इन्द्रिय (इन्द्रवीर्य=आत्म-शक्ति) जाग गई, मुझे स्थिर पोषक रस मिल गया, मुझमें छन्दोबद्ध दिव्य ज्ञान प्रकट होने लगा, मुझे यज्ञों का दर्शन होने लगा (अर्थात् मुझे किस समय किस प्रकार से आत्मत्यागमय शुभकर्म करना चाहिए, यह भासित होने लगा) और पुण्यों द्वारा जिस सुख का अर्जन संसार करना चाहता है वह सुख भी मेरा साथी हो गया। इतनी सब वस्तुएँ मुझे इकट्ठी मिल गई। लोगों को इसपर सहज ही विश्वास न होगा, पर यह सच है। सचमुच तेरे ज्ञान-भण्डार का एक ज्ञानकण, तेरी बलराशि का एक अणु, इस तुच्छ मनुष्य को सर्वथा भरपूर कर देता है।

साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

केवल जल्लीकट्टू का विरोध गलत

जल्लीकट्टू एक खेल है या धार्मिक आस्था से जुड़ी एक परम्परा का सवाल? पिछले कई दिनों से यह मामला उभरकर सामने आया है। दरअसल जल्लीकट्टू को धार्मिक आस्था से इस वजह से भी जोड़ा जा रहा है कि पोंगल त्योहार के दौरान यह खेल पिछले चार सौ वर्षो से खेला जाता रहा है। हो सकता है उस समय कोई और खेल न रहा हो अपने बल और पराक्रम को साबित करने के लिए इस खेल का आयोजन होता हो! पर आज ऐसा नहीं है। आज के आधुनिक युग में सैंकड़ों खेल उभर कर सामने आये हैं जिन्हें बिना किसी हिंसा या चोट के खेला जाता है। परन्तु इस खेल की प्राचीनता को लेकर उभरे इस नये विवाद में राजनीतिक हस्तक्षेप से भी इंकार नहीं किया जा सकता। अक्सर हमारे देश में बहुतेरे फैसले जन भावनाओं को ध्यान में रखकर लिए जाते हैं। लेकिन पिछले कुछ समय में सबने देखा कि ज्यादतर फैसलों में सुप्रीम कोर्ट को विरोध का सामना करना पड़ा है चाहे उसमें जन्माष्टमी की दही-हांड़ी प्रतियोगिता हो या महाराष्ट्र, कर्नाटक, पंजाब, हरियाणा, केरल व गुजरात में परंपरागत बैलगाड़ी दौड़ प्रतियोगिता।

जल्लीकट्टू तमिलनाडु के ग्रामीण इलाकों का एक परंपरागत खेल है जिसमें बैलों से इंसानों की लड़ाई कराई जाती है। जल्लीकट्टू को तमिलनाडु के गौरव तथा संस्कृति का प्रतीक भी कहा जाता है। तमिलनाडु से सुप्रीम कोर्ट के वकील वी. सालियन के अनुसार ये 5000 साल पुराना खेल है जो उनकी संस्कृति से जुड़ा है। प्राचीन काल में महिलाएं अपने वर को चुनने के लिए जल्लीकट्टू खेल का सहारा लेती थीं। जल्लीकट्टू खेल का आयोजन स्वयंवर की तरह होता था जो कोई भी योद्धा बैल पर काबू पाने में कामयाब होता था महिलाएं उसे अपने वर के रूप में चुनती थीं। हालाँकि इस तरह का खेल स्पेन में भी होता है जिसे बुल-फाइट कहते हैं और वहां ये खेल काफी लोकप्रिय है। कई बार जल्लीकट्टू के इस खेल की तुलना स्पेन की बुलफाइटिंग से भी की जाती है। लेकिन ये खेल स्पेन के खेल से काफी अलग है इसमें बैलों को काबू करने वाले युवक किसी तरह के हथियार का इस्तेमाल नहीं करते हैं।

2014 में जानवरों की सुरक्षा करने वाली संस्था पेटा इस मामले को सुप्रीम कोर्ट में ले गयी थी। अदालत ने इस खेल पर पाबंदी लगाने का फैसला सुनाया। जल्लीकट्टू सामंती युग की एक परंपरा है जो न सिर्फ पशुओं बल्कि इसमें शामिल इंसानों के लिए भी घातक है। पिछले दो दशक में करीब दो सौ लोगों ने इसमें अपनी जान गवां दी है। लेकिन परम्परा के नाम पर इसे आज भी ढोया जा रहा है। अब यदि इसमें तमिल लोगों की राय माने तो वह कहते हैं कि पशु प्रेमी संस्था पेटा को परंपराओं के नाम पर पशुओं के प्रति क्रूरता और जगह क्यों दिखाई नहीं देती। उनका साफ तौर पर इसका इशारा बकरीद पर होने वाले पशुओं के सामूहिक संहार की ओर है।

प्रदर्शनकारियों की माने तो जल्लीकट्टू पर पाबंदी तमिलों की भावनाओं की अनदेखी है और इसे तमिल स्वाभिमान पर चोट के रूप में देखा जाना चाहिए। उनका कहना है कि क्या प्राचीन सांस्कृतिक त्योहार अब अदालतें तय करेंगी? तमिल समाज यह मानने के लिए तैयार है कि जिस चौखटे में और जिस रूपरेखा में अदालत उन्हें जल्लीकट्टू मनाने की इजाजत दे, वे उसे स्वीकार करेंगे तो फिर इज़ाजत क्यों नहीं मिलती? हालाँकि इसे कुछ लोग उत्तर भारत बनाम दक्षिण की सांस्कृतिक जंग बनाने का विकृत प्रयास भी कर रहे हैं जो हमारी राष्ट्रीय एकता के लिए अच्छी नहीं है। लेकिन इस सारे मामले में यह भी समझना चाहिए कि इतनी बड़ी संख्या में क्या तमिल युवा बिना नेतृत्व, बिना किसी संगठन और बिना किसी राजनीतिक दल के हस्तक्षेप से सड़कों पर उतर आए हैं?

जल्लीकट्टू हो या बकरीद, ताजिये हो या बली प्रथा ऐसी बहुतेरी प्रथाओं का चलन जब शुरू हुआ तब हमारे जीवन मूल्य कुछ और थे। हमारे जीने का ढंग दूसरा था। आज हमारे रहन-सहन के तौर-तरीके में काफी परिवर्तन आया है। लेकिन हम आज भी अक्सर इनकी प्राचीनता को संस्कृति का नाम देकर बचाने की दुहाई देने लगते हैं। बल और पराक्रम दर्शाकर स्वंयवर रचना उससे जीवन संगनी हासिल करना पुराने समय की प्रथा थी। आज ऐसा नहीं है सोशल मीडिया से लेकर कार्यालयों में साथी महिला कर्मचारी से भी विवाह होते देखे जाते हैं। आमतौर पर बल से मादा हासिल करना सब जानवरों में भी देखा जाता है कि नर पशु अपनी मादा को रिझाने के लिए अपनी श्रेणी के अन्य नर पशुओं पर अपनी ताकत का हिंसक प्रदर्शन करते हैं।

समय के अनुसार मनुष्य समाज परिवर्तन करता आया है। उसी समाज के बुद्धिजीवी लोग अपनी कुप्रथाओ के विरुद्ध आवाज उठाने लगते हैं। सती जैसी क्रूर प्रथा आज समाज से खत्म हो चुकी है। पेटा जैसी संस्थाओं का आगे आना पशुओं के प्रति दया दिखाना सम्माननीय है। लेकिन तमिल लोग इस संस्था की आलोचना करते हुए सवाल रख रहे हैं कि ईद पर पशुओं की कुर्बानी पर चुप रहते हैं, क्रिसमस पर टर्की नामक पक्षी को भूनकर खाने पर नहीं बोलते हैं और रेसकोर्स की घुड़दौड़ की अनदेखी करते हैं। वे उनकी संस्कृति से जुड़े खेल उत्सव को कैसे बंद करा सकते हैं? देश के अन्य हिस्सों की तरह तमिलों के घरों में नंदी बैल पर समस्त शिव परिवार विराजित दिखाने वाले चित्र लगे रहते हैं। आम तमिलों का सवाल है कि क्या अब पेटा की याचिका पर शिवजी को नंदी से उतारा जाएगा, हो सकता है नंदी बैल को कष्ठ होता हो? और ऐसे चित्र बैलों पर अत्याचार की प्रेरणा देते हैं। वह सवाल उठा रहे हैं कि सर्वोच्च न्यायालय ने आतंकी याकूब के वकीलों की दलीलें सुनने आधी रात को भी दरवाजे खोल दिए थे, लेकिन एक सांस्कृतिक उत्सव पर पाबंदी की जल्द सुनवाई करने से मना कर दिया। क्या यह खेल एक आतंकवादी के हिंसक कारनामों से भी बुरा है? क्या पेटा बकरीद पर हिंसा के नाम पर अपील कर सकती है यदि नहीं तो फिर केवल जल्लीकट्टू का विरोध गलत है। *-सम्पादकीय*

'पूजनीय प्रभो हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिए...'
गीत को बनाएं अपने मोबाइल की रिंग टोन एवं कॉलर ट्यून
(Download Mobile Ring Tune & CallerTunes)

airtel	AIRTEL	DIAL 543211 4684461	idea	Set Tune	DIAL 56789 5021683
BSNL	BSNL E & S	SMS BT 5021683 to 56700	BSNL	BSNL N & W	SMS BT 804061 to 56700
vodafone	Vodafone	SMS BT 5021683 to 56789	TATA	TATA	SMS CT 5021683 to 543211
MTNL	MTNL	SMS PT 5021683 to 56789	AIRCEL	AIRCEL	SMS DT 804061 to 53000
RELIANCE	Set Tune	SMS CT 6312078 to 51234			

प्रथम पृष्ठ का शेष

होने पर उनको अपने समान जीवन साथी की तलाश रहती है। मूलभूत बात यह है कि जहां आर्य परिवार नहीं मिलते उनके बीच सामंजस्य बैठाने के लिए मैं आधे घण्टे का शेशन देता हूं।' श्री सहगल ने सुखी जीवन का मूल मंत्र बताते हुए कहा कि ''बुजुर्ग इज्जत चाहते हैं और आपको मुफ्त में आशीर्वाद पाना है। इसके लिए सास बहू को समझाने का एक गुरुमंत्र है कि बहू को सुबह उठकर सास के पैर छूने हैं और सास ने बहू को आशीर्वाद देना है। फिर देखिए सामजस्य स्वत: ही स्थापित हो जाएगा।'' श्री सहगल अपनी बात को गति देते हुए कहा कि ''यह परम्परा बहुत पुरानी है। पहले स्वयंवर हुआ करते थे आज यह मंच है। पर यह सौभाग्य मुझे प्राप्त नहीं हुआ सीता जी को हुआ था। पर आप लोग बड़े लकी हैं कि आप ये मौका प्राप्त हो रहा है कि स्वयं अपनी पसंद का वर या वधू का चयन करें। मेरी शुभकामनाएं आपसे साथ हैं।''

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने कहा ''जीवन का एक फलसफा है जो सबको समझ लेना चाहिए। हर व्यक्ति चाहता है हमें बहुत कुछ मिले लेकिन हर व्यक्ति को सब कुछ नहीं मिलता। कुछ प्रमुख चीजों को सोचें उन्हें तय कर लीजिए तो वह जरूर मिलता है।'' दिल्ली सभा महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने सभी आगन्तुकों का स्वागत करते हुए कहा कि 'सबसे पहले हमें ऐसे प्लेटफार्म की आवश्यकता थी जहां पर सुयोग्य युवक-युवतियों की तलाश प्रारम्भ की जाये। इस विचार को सार्थक करने का प्रयास किया गया जो सफल रहा और आज यह हमारा 17वां परिचय सम्मेलन है जो दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है। परिचय सम्मेलन की सफलता का आकलन इस बात से भी किया जा सकता है कि दिल्ली में केवल दिल्ली के परिवार ही नहीं बल्कि बिहार, हरियाणा आदि राज्यों के परिवार भी अपने बच्चों के साथ आज के इस सम्मेलन में हिस्सा ले रहे हैं।'' श्री विनय आर्य जी ने बताया कि ''आर्य समाज की वेव साईट में मैट्रीमोनी के अन्तर्गत आशातीत रजिस्ट्रेशन हो रहे हैं जिसके माध्यम से आर्य परिवारों में अनेक रिश्ते तय हुए हैं। अभी हाल ही में दो शादियां दिल्ली में जनवरी माह में होने वाली हैं जिनके रिश्ते पिछले आर्य परिचय सम्मेलन के दौरान तय हुए थे।''

संयोजक श्री एस.पी. सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि समान गुण, कर्म और स्वभाव वाले युवक एवं युवतियों के लिए। एक बात विशेष रूप से मैं कहना चाहता हूं कि आप अपने विवाह योग्य बच्चों को जरूर लाएं क्योंकि जो बात यहां विद्वानों द्वारा समझाई जाती है वह आप स्वयं अपने बच्चों को नहीं समझा सकते। यहां पर सभी आर्य परिवार के सदस्य हैं इस लिए मांसाहारी-शाकाहारी, मांगलिक-अमांगलिक, जाति-पांति दहेज आदि की बात यहां कहना निरर्थक है क्योंकि प्रत्येक आर्यसमाजी शाकाहारी होता है और वह जाति-पांति के भेदभाव से दूर होता है।''

राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुन देव चढ्डा जी ने कहा कि ''दहेज विहीन समाज बनाना आर्य समाज का एक महत्त्वपूर्ण कार्य रहा है और यह सम्मेलन उसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा न केवल दिल्ली अपितु भारत के विभिन्न राज्यों में अब तक 16 परिचय सम्मेलन आयोजित किये जा चुके हैं। इसी कड़ी में ये 17वां सम्मेलन है। खुशी की बात यह है कि इन सम्मेलनों के माध्यम से अब तक लगभग 900 परिवार के आपस में रिश्ते सम्पन्न हो चुके हैं। हमारा उद्देश्य है कि महर्षि दयानन्द के कथनानुसार हम आर्य बने तथा विश्व को आर्य बनावें। इस हेतु केवल आप ही नहीं बल्कि अपने मित्रों, रिश्तेदारों के बच्चों के रिश्तों के लिए उन्हें यहां आमन्त्रित करें, उन्हें यहां आने के लिए प्रेरित करें।''

कार्यक्रम का संचालन श्री हर्षप्रिय आर्य व श्रीमती विभा आर्य एवं श्रीमती वीना आर्या जी द्वारा बड़े ही सहज रूप से किया गया। विवाह योग्य युवक-युवतियों ने बड़े आत्मविश्वास के साथ अपना परिचय दिया तथा वे कैसा जीवन साथी चाहते हैं। इसकी खुलकर चर्चा की। इसके साथ एक विशेष बात इस परिचय सम्मेलन में देखने को मिली जहां एक ओर युवक-युवतियों ने बेझिझक अपनी पसन्द-ना पसन्द को लोगों के समक्ष रखा। वहीं उन्होंने यह भी बताया कि वे किस आर्य समाज से सम्बद्ध हैं और वे आर्य समाज के प्रति कितने सजग हैं। सभा की ओर से पंजीकृत युवक-युवतियों के विवरण की एक पुस्तिका भी प्रकाशित की गई। सम्मेलन में लगभग 40 युवक-युवतियों के पंजीकरण किये गये व लगभग 32 परिवारों ने आपसी बातचीत कर रिश्तों की बात को आगे बढ़ाने के लिए आपस में चर्चा की। सभा की ओर से तत्काल रजिस्ट्रेशन की व्यवस्था अन्तर्गत स्टाल लगाया गया जिसमें पूछताछ, रजिस्ट्रेशन, विवरण पुस्तिका, बैज वितरित किये गये। स्टाल संचालन में कु. हविषा आर्या, कु. परिणीता आर्या, श्रीमती विभा आर्या, श्रीमती वीना आर्या, श्री मनोज नेगी का विशेष सहयोग रहा। पंजीकरण के लिए प्रात: से ही पंजीकरण कराने वालों का तांता लगा हुआ था। कार्यक्रम के समापन अवसर पर संयोजक श्री अर्जुन देव चढ्डा ने श्री प्रेम सचदेवा प्रधान आर्य समाज अशोक विहार-1 को रुद्राक्ष का एक पौधा भेंट कर पर्यावरण सम्बन्धी अपनी नीतियों को दर्शाया। आर्य समाज अशोक विहार-1 की ओर से सभी मेहमानों के लिए चाय-नाश्ते के साथ-साथ भोजन की व्यवस्था की गई।

- एस. पी. सिंह, संयोजक

आर्यसमाज बिडल लाइन्स का 87वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज बिडला जलानन्स का 87वां वाषिकोत्सव सोमवार 23 जनवरी, 2017 को मनाया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ सायं 5:30 से 6:30 बजे तक आचार्य कुंवरपाल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में तथा सायंकाल 6:30 से 7:30 बजे भजन श्री दिनेश दत्त आर्य एवं गौरव आर्य जी तथा प्रवचन डॉ. छविकृष्ण शास्त्री जी के होंगे। आप सादर आमन्त्रित हैं।

- सुधरी चन्द्र घई, मन्त्री

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है। **वार्षिक शुल्क 250/- रुपये** तथा **आजीवन शुल्क** (दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। - *सम्पादक*

क्या आप चाहते हैं कि-

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां! तो

जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उनकी ईमेल आई.डी. लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा। - सम्पादक

सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने हेतु साहित्य प्रचार यज्ञ में आहुति देने वाले महानुभावों की सूची

गतांक से आगे -

56. श्री रणजीत प्रभाकरण चांदवाले (यू.एस.ए.) 4000

57. श्री दयानन्द प्रसाद आर्य 2000

- क्रमशः

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अपने परिवार, आर्यसमाज और अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जनसाधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैक ड्राफ्ट के माध्यम से **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है। - *महामन्त्री*

खेद व्यक्त : खेद है कि आर्यसन्देश के अंक 11 दिनांक 9 जनवरी से 15 जनवरी के अंक में पृष्ठ 7 पर प्रकाशित 'सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने हेतु आहुति देने वाले महानुभावों की सूची' में क्रमांक 31 पर दिए गए नाम श्री आनन्द कुमार चौहान के स्थान पर **श्री आनन्द कुमार आर्य** प्रकाशित हो गया है, कृपया इसे सुधारकर **'श्री आनन्द कुमार चौहान (कुन्टकोम इण्डिया लिमि.)'** पढ़ा जाए। आर्य सन्देश परिवार इस भूल के लिए खेद व्यक्त करता है।- **सम्पादक**

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 26/27 जनवरी, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 25 जनवरी 2017

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के अन्तर्गत

वार्षिक नैतिक शिक्षा परीक्षा का आयोजन

मंगलवार 31 जनवरी, 2017 प्रात: 9:30 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली से सम्बद्ध/असम्बद्ध दिल्ली स्थित आर्य विद्यालयों जिनमें नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में लागू किया गया है, के सभी विद्यार्थियों (कक्षा-1 से 12 तक) की नैतिक शिक्षा परीक्षा का आयोजन 31 जनवरी, 2017 को प्रात: 9:30 बजे सभी विद्यालयों में किया जाएगा। अत: जिन विद्यालयों ने अभी तक अपने विद्यालयों के बच्चों की संख्या सूची न भेजी हो, उनसे निवेदन है कि अपने विद्यालय के विद्यार्थियों की संख्या कक्षावार सूची बनाकर यथाशीघ्र भेज दें जिससे संख्यानुसार विद्यालयों को प्रश्नपत्र भेजे जा सकें। सभी विद्यालयों की परीक्षा एक ही दिन एक ही समय सम्पन्न होगी।

- सुरेन्द्र रैली, प्रस्तौता (9810855695)

वरिष्ठ आर्य नेता एवं सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान
श्री सोमदत्त महाजन जी का 90वां जन्म दिवस

आर्य समाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली के संस्थापक मन्त्री, पश्चिम दिल्ली के वरिष्ठ आर्यनेता एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री सोमदत्त महाजन जी का 90वां जन्म दिवस समारोह आगामी 12 फरवरी 2017 को प्रात: 8.30 से 11 बजे बड़े धूमधाम से आयोजित कर रहा है। श्री महाजन जी ने दिल्ली सभा के उप प्रधान पद को भी सुशोभित किया। उनके नेतृत्व में सभा द्वारा संचालित दीवानचन्द स्मारक गोकुल चन्द आर्य अस्पताल, औचन्दी के नव निर्माण का कार्य पूर्ण हुआ। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार आपके दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की कामना करती है।- ***सतीश चड्ढा, मन्त्री***

प्रतिष्ठा में,

अत्यावश्यक सूचना : यज्ञ पर शोध

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने निश्चय किया है कि यज्ञ की विधि और उसकी वैज्ञानिकता पर अधिक शोध किया जाए। इसके लिए यज्ञ और उसकी वैज्ञानिकता में रुचि रखने वाले अथवा कुछ शोधकार्य कर चुके या करने की इच्छा करने वाले आर्यजन अपने नाम, मोबाईल नं. और ईमेल आईडी भेजने की कृपा करें। जिनके पास पहले से ही विभिन्न व्यक्तियों और संस्थाओं द्वारा किये गये शोध के कुछ परिणाम हों अथवा प्रकाशित लेख हों उनकी प्रति भी यथाशीघ्र भिजवाने की कृपा करें। आगामी शोध कार्य आर्य समाज स्थापना दिवस के दिन से आरम्भ किया जाने का प्रस्ताव है अत: उपर्युक्त जानकारी शीघ्रअतिशीघ्र सभा कार्यालय को भिजवाने की कृपा करें।

-विनय आर्य, महामन्त्री

दिल्ली सभा कार्यालय -15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

Email : aryasabha@yahoo.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

ओ३म्
विवाह योग्य लड़के-लड़कियों
का पंजीकरण करायें।

विवाह सम्बन्ध सेवायें
(प्रतिदिन)
प्रात: 10:00 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक
सायं 2:00 बजे से सायं 6:00 बजे तक
लड़का/लड़की की फोटो व आधार कार्ड साथ लेकर आयें
आर्यसमाज कीर्तिनगर
(दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित)
ए-37, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015
✆ 011-49071958, 9313013123

MDH हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो (5,10, 20 किलो की पैकिंग)
अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह